अध्याय 4

आय निर्धारण

अब तक हमने राष्ट्रीय आय, कीमत स्तर, ब्याज की दर इत्यादि के मूल्यों को नियंत्रित करने वाली शक्तियों का अन्वेषण किये बिना ही एक तदर्थ रूप से इनके संबंध में चर्चा की है। समष्टि अर्थशास्त्र का मौलिक उद्देश्य इन परिवर्तों के मूल्यों को निर्धारित करने के प्रक्रमों का वर्णन करने में सक्षम सैद्धांतिक उपकरणों अर्थात मॉडलों का विकास करना है। विशेष तौर पर मॉडलों के माध्यम से कुछ प्रश्नों की सैद्धांतिक व्याख्या करने का प्रयत्न किया जाता है, जैसे–अर्थव्यवस्था में धीमी संवृद्धि की अवधि अथवा मंदी अथवा कीमत स्तर में वृद्धि या बेरोजगारी में वृद्धि आदि के क्या कारण हैं। एक ही समय इन सभी परिवर्तों के संबंध में बताना कठिन है। अतः जब हम किसी परिवर्त विशेष के निर्धारण पर ध्यान केंद्रित करें, तो हमें अन्य सभी परिवर्तों के मूल्यों को स्थिर रखना चाहिए। यह प्रायः किसी भी सैद्धांतिक अभ्यास का प्ररूपी रूढ़ीकरण है, जिसे *सेटेरिस पारिबस (Ceteris Paribus)* की मान्यता कहते हैं, जिसका शब्दिक अर्थ है 'यदि अन्य बातें समान रहें'। आप निम्नलिखित प्रकार से इस प्रक्रिया पर विचार कर सकते हैं: दो समीकरणों से दो परिवर्तों x और y का मूल्य निकालने के लिए, हम प्रथम समीकरण में x का मूल्य y के पदों में लिखते हैं और इस मूल्य को दूसरे समीकरण में प्रतिस्थापित कर पूर्ण हल प्राप्त करते हैं। इसी विधि का प्रयोग हम समष्टि अर्थशास्त्र में भी करते हैं।

4.1 प्रत्याशित और यथार्थ

राष्ट्रीय आय लेखांकन वाले अध्याय में हम उपभोग, निवेश अथवा किसी अर्थव्यवस्था में अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का कुल निर्गत (सकल घरेलू उत्पाद) के संबंध में अध्ययन कर चुके हैं। इन पदों के दो अर्थ होते हैं। *अध्याय-2* में इनका प्रयोग लेखांकन के अर्थ में हुआ है–जिससे किसी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत एक दिए हुए वर्ष में उत्पादन गतिविधियों की माप करने से इन मदों का वास्तविक मूल्य प्राप्त होता है। इन वास्तविक अथवा लेखांकन मूल्यों को, हम इन मदों का यथार्थ माप कहते हैं।

तथापि इन पदों का प्रयोग भिन्न अर्थों में किया जा सकता है। उपभोग से यह पता नहीं चल सकता कि वास्तव में किसी निश्चित वर्ष में लोगों ने कितना उपभोग किया, बल्कि उस अवधि में उन्होंने उपभोग की कितनी मात्रा की योजना

बनायी। इसी तरह, निवेश का अर्थ हो सकता है कि उत्पादक ने अपनी माल–सूची में कितनी मात्रा में वृद्धि की योजना बनायी है। यह मात्रा उस मात्रा से भिन्न भी हो सकती है, जितना कि उत्पादन वह अंतिम रूप से कर पाती है। मान लीजिए कि उत्पादक वर्ष के अंत तक अपने भंडार में 100 रु० मूल्य की वस्तु जोड़ने की योजना बनाता है। अत: उस वर्ष में उसका नियोजित निवेश 100 रु० है। किंतु बाज़ार में उसकी वस्तुओं की माँग में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण उसकी विक्रय मात्रा में उस परिमाण से अधिक वृद्धि होती है, जितना कि उसने बेचने की योजना बनाई थी। इस अतिरिक्त माँग की पूर्ति के लिए उसे अपने भंडार से 30 रु० मूल्य की वस्तु बेचनी पड़ती है। अत: वर्ष के अंत में उसकी माल–सूची में केवल (100 – 30) रु० = 70 रु० की वृद्धि होती है। उसका नियोजित निवेश 100 रु० है, जबकि उसका यथार्थ निवेश केवल 70 रु० है। इन परिवर्तों–उपभोग, निवेश अथवा अंतिम वस्तुओं के निर्गत के नियोजित मूल्य को हम उनकी **प्रत्याशित** माप कहते हैं।

अर्थव्यवस्था के सैद्धांतिक मॉडल में इन परिवर्तों के प्रत्याशित मूल्य से हमारा प्राथमिक सरोकार होना चाहिए। यदि कोई यह पूर्वानुमान करना चाहता है कि अंतिम वस्तु, निर्गत अथवा सकल घरेलू उत्पाद का संतुलन मूल्य क्या होगा, तो उसके लिए यह जानना महत्त्वपूर्ण होगा कि अंतिम वस्तुओं की कितनी मात्रा की लोगों ने माँग अथवा पूर्ति करने की योजना बनायी है। अत: हमें उपभोग, निवेश अथवा अर्थव्यवस्था के समस्त निर्गत के प्रत्याशित मूल्यों के निर्धारकों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

प्रत्याशित उपभोग: नियोजित उपभोग किस पर निर्भर करता है? लोग अपनी आय का एक भाग उपभोग पर व्यय करते हैं तथा शेष की बचत करते हैं। मान लीजिए, आपकी आय 100 रु० बढ़ जाती है। आप इस पूरी अतिरिक्त आय को खर्च नहीं करेंगे बल्कि इसके कुछ भाग, को मान लीजिए 20% आप बचा कर रखेंगे। जिसे आप बचत के रूप में उस अवधि के लिए रखते हैं, जब आपकी आय बंद हो जाती है अथवा भविष्य में अधिक व्यय का सामना करना पड़ता है। भिन्न–भिन्न लोग अपनी अतिरिक्त आय के भिन्न–भिन्न भाग की बचत करने की योजना बनाते हैं (धनी लोग गरीबों की तुलना में अपनी आय के अधिक अनुपात की बचत करते हैं) और यदि इनका औसत निकालें तो हमें एक ऐसा अंश प्राप्त होगा, जिससे यह ज्ञात होगा कि लोग संपूर्ण रूप से अर्थव्यवस्था की कुल अतिरिक्त आय का कितना अनुपात बचाना चाहते हैं। इस अंश को हम *सीमांत बचत प्रवृत्ति* कहते हैं। इससे किसी अर्थव्यवस्था की कुल अतिरिक्त आय में उस अर्थव्यवस्था की कुल अतिरिक्त नियोजित बचतों का अनुपात प्राप्त होता है। चूँकि उपभोग बचतों का पूरक होता है (अर्थव्यवस्था की अतिरिक्त आय या तो अतिरिक्त बचत होती है अथवा लोगों द्वारा अतिरिक्त उपभोग के रूप में प्रयोग होती है)। यदि हम सीमांत बचत प्रवृत्ति को 1 में से घटा दें, तो हमें *सीमांत उपभोग प्रवृत्ति* प्राप्त होती है। यह कुल अतिरिक्त आय का वह अंश है, जो कि लोग उपभोग में प्रयोग करते हैं। मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था की *सीमांत उपभोग प्रवृत्ति* c है, जहाँ $0 < c < 1$ है। यदि अर्थव्यवस्था की कुल आय में 0 से Y तक वृद्धि हो जाती है, तो अर्थव्यवस्था का कुल उपभोग होगा–

$$C = c\,(Y - 0) = c.Y$$

किंतु स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं होता। हमने यहाँ कुछ भूल की है। यदि अर्थव्यवस्था की आय किसी नियत वर्ष में शून्य हो, तो उपर्युक्त समीकरण बताता है कि अर्थव्यवस्था पूरे वर्ष कंगाल बनी रहेगी, जो कि नि:संदेह एक अच्छा विचार नहीं है। यदि आपकी आय किसी नियत अवधि

में शून्य है, तो आप जीवनयापन के एक निश्चित उपभोग पर अपनी पूर्व बचत को खर्च करते हैं। अतः हमें उपर्युक्त समीकरण में अर्थव्यवस्था के उपभोग के न्यूनतम अथवा जीवन निर्वाह स्तर को अवश्य जोड़ना चाहिए। जो होगा–

$$C = \overline{C} + c.Y \qquad (4.1)$$

जहाँ $\overline{C} > 0$ न्यूनतम उपभोग स्तर है और हमारे मॉडल में दिया हुआ या बहिर्जात मद है, जिसे स्थिर माना जाता है। समीकरण बताता है कि जब अर्थव्यवस्था की आय शून्य से अधिक होती है, तो अर्थव्यवस्था इस अतिरिक्त आय का c अनुपात का प्रयोग अपने उपभोग में न्यूनतम स्तर से वृद्धि करने में करती है।

प्रत्याशित निवेश: निवेश को भौतिक पूँजी स्टॉक (जैसे कि मशीन, भवन, सड़क इत्यादि, अर्थात् ऐसी कोई भी चीज़ जिनसे भविष्य में अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता में वृद्धि हो) में वृद्धि और उत्पादक की माल-सूची (तैयार माल का स्टॉक) में परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जाता है। ध्यान दें कि निवेश वस्तुएँ (जैसे-मशीन) भी अंतिम वस्तुओं का भाग हैं। ये कच्चे माल की तरह मध्यवर्ती वस्तुएँ नहीं हैं। किसी दिए हुए वर्ष में मशीनों का जो उत्पादन होता है, उनका प्रयोग उसी वर्ष अन्य वस्तुओं के उत्पादन में नहीं होता है बल्कि कई वर्षों तक उनकी सेवाएँ ली जाती हैं।

उत्पादकों का निवेश संबंधी निर्णय, जैसे कि नयी मशीनों की खरीद, अधिकांशतः ब्याज की बाज़ार दर पर निर्भर करता है। किंतु सरलता की दृष्टि से हम यह मान लेते हैं कि फर्म हर वर्ष उसी मात्रा में निवेश करने की योजना बनाती है। प्रत्याशित निवेश माँग को हम इस प्रकार लिख सकते हैं:

$$I = \overline{I} \qquad (4.2)$$

जहाँ, $\overline{I}$ धनात्मक स्थिरांक है। $\overline{I}$ दिए हुए वर्ष में अर्थव्यवस्था में स्वायत्त (दिया हुआ अथवा बहिर्जात) निवेश को प्रदर्शित करता है।

अंतिम वस्तुओं के लिए प्रत्याशित समस्त माँग: सरकार रहित अर्थव्यवस्था में अंतिम वस्तु की प्रत्याशित समस्त माँग ऐसी वस्तुओं पर किये गए कुल प्रत्याशित उपभोग व्यय और प्रत्याशित निवेश व्यय का योग होती है, अर्थात् $AD = C + I$ । समीकरण 4.1 और 4.2 से और C और I के मूल्यों को प्रस्थापित करने पर अंतिम वस्तुओं की समस्त माँग को इस प्रकार लिखा जा सकता है–

$$AD = \overline{C} + \overline{I} + c.Y$$

यदि अंतिम वस्तु बाज़ार संतुलन में हो, तो इसे इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$Y = \overline{C} + \overline{I} + c.Y$$

जहाँ Y अंतिम वस्तु की प्रत्याशित अथवा नियोजित पूर्ति है। इस समीकरण को दो स्वायत्त पदों $\overline{C}$ और $\overline{I}$ को जोड़कर पुनः इस प्रकार सरल किया जा सकता है:

$$Y = \overline{A} + c.Y \qquad (4.3)$$

जहाँ $\overline{A} = \overline{C} + \overline{I}$ अर्थव्यवस्था का कुल स्वायत्त व्यय है। वास्तव में स्वायत्त व्यय के ये दोनों घटक भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यवहार करते हैं और अर्थव्यवस्था के जीवन निर्वाह उपभोग स्तर को प्रदर्शित करने वाला $\overline{C}$, प्रायः स्थिर ही रहता है। किंतु $\overline{I}$ में समय-समय पर उतार-चढ़ाव देखा जाता है।

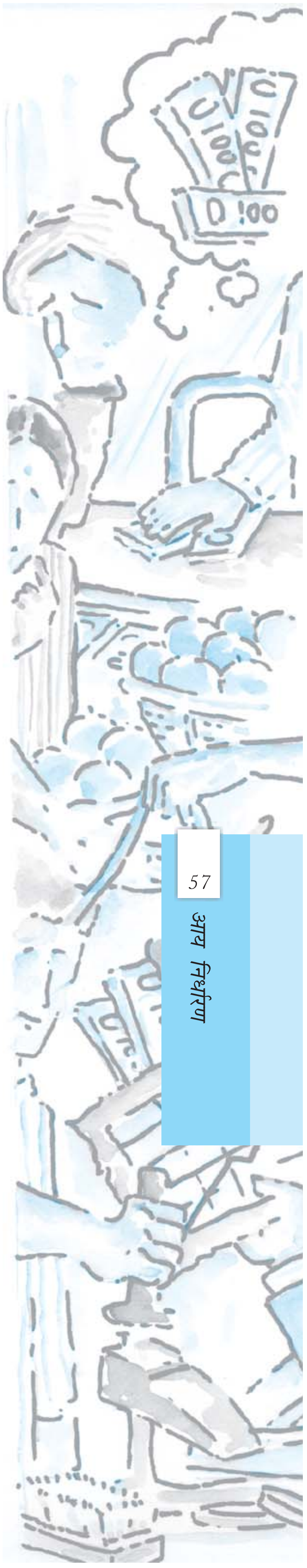

यहाँ एक बात ध्यान देने की है, समीकरण 4.3 की बायीं ओर Y पद अंतिम वस्तुओं की प्रत्याशित निर्गत अथवा नियोजित पूर्ति को प्रदर्शित करता है। दूसरी ओर, दायीं ओर की अभिव्यक्ति से अर्थव्यवस्था में अंतिम वस्तु की प्रत्याशित अथवा नियोजित समस्त माँग प्रदर्शित होती है। जब अंतिम वस्तु बाज़ार और अर्थव्यवस्था संतुलन की स्थिति में होती हैं, तभी प्रत्याशित पूर्ति प्रत्याशित माँग के बराबर होती है। अतः समीकरण 4.3 को अध्याय 2 के तादात्म्य का लेखांकन से भ्रमित नहीं करना चाहिए, जो कि यह बतलाता है कि कुल निर्गत का यथार्थ मूल्य *हमेशा* अर्थव्यवस्था के यथार्थ उपभोग और यथार्थ निवेश के कुल योग के बराबर होता है। यदि अंतिम वस्तु के निर्गत से, जो कि उत्पादक किसी नियत वर्ष में उत्पादन करने का नियोजन करता है अंतिम वस्तु की प्रत्याशित माँग कम हो, तो समीकरण 4.3 सही नहीं होगा। गोदाम में स्टॉक का अंबार लगा रहेगा, जिसे *माल-सूची* का *अनभिप्रेत संचय* कहा जाएगा। यह नियोजित अथवा प्रत्याशित निवेश का अंश नहीं है, किंतु निश्चित रूप से यह वर्ष के अंत में माल-सूची में हुई वास्तविक वृद्धि का अंश है अथवा दूसरे शब्दों में, एक यथार्थ निवेश होगा। अतः यद्यपि नियोजित Y नियोजित $C+1$ से अधिक है, फिर भी वास्तविक Y वास्तविक $C+1$ के बराबर होगी। लेखांकन तादात्म्य की दायीं ओर यथार्थ निवेश में मालों का अनभिप्रेत संचय के रूप में अतिरिक्त निर्गत को दर्शाता है।

यहाँ अब हम अर्थव्यवस्था में सरकार को शामिल करेंगे। अंतिम वस्तुओं और सेवाओं की समस्त माँग को प्रभावित करने वाले सरकार के मुख्य कार्यकलाप का संक्षिप्त विवरण *राजकोषीय* परिवर्त कर (T) और सरकारी व्यय (G) जो दोनों हमारे विश्लेषण में स्वायत्त हैं, के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। अन्य फर्मों तथा परिवारों की तरह सरकार अपने व्यय (G) के माध्यम से समस्त माँग में वृद्धि करती है। दूसरी ओर, सरकार कर लगाकर परिवारों की आय का एक अंश ले लेती है। अतः उसकी प्रयोज्य आय $Y_d = Y - T$ हो जाती है। परिवार इस प्रयोज्य आय के केवल एक अंश का ही व्यय उपभोग के लिए करते हैं। अतः सरकार को शामिल करने के लिए समीकरण 4.3 में निम्न प्रकार से परिवर्तन करना होगा:

$$Y = \bar{C} + \bar{I} + G + c(Y - T)$$

ध्यान दीजिए कि $\bar{C}$ और $\bar{I}$ की तरह $G - c.T$ स्वायत्त पद $\bar{A}$ में शामिल हो जाता है। इससे विश्लेषण में कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं होता है। सरलता की दृष्टि से, हमने इस अध्याय के शेष भाग में सरकारी क्षेत्र की ओर ध्यान नहीं दिया है। यह भी द्रष्टव्य है कि सरकार द्वारा आरोपित अप्रत्यक्ष कर और दिए गए उपदान के बिना अर्थव्यवस्था में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य, अर्थात सकल घरेलू उत्पाद तादात्म्य रूप से राष्ट्रीय आय के समान होते हैं। यहाँ से आगे, इस अध्याय के पूरे शेष भाग में हम Y को सकल घरेलू उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय के रूप में सूचित करेंगे।

4.2 एक वक्र पर संचलन बनाम एक वक्र का शिफ्ट

अर्थव्यवस्था के मॉडल का विश्लेषण करने के लिए हम आलेखीय तकनीकों का प्रयोग करेंगे। अतः किसी ग्राफ को पढ़ना हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है। $b = ma + \varepsilon$, रूप में सरल रेखीय समीकरण को दर्शाने वाले आलेख पर क्षैतिज और उर्ध्वाधर अक्षों पर a और b दो परिवर्तों को नीचे दर्शाया गया है। यहाँ $m > 0$ को सरल रेखा की प्रवणता कहते हैं और $\varepsilon > 0$ उर्ध्वाधर (अर्थात b) अक्ष पर अंतःखंड है। जब a में 1 इकाई की वृद्धि होती है, तो b के मूल्य में m इकाइयों से वृद्धि हो जाती है। इसे *आलेख पर* परिवर्तों का **संचलन** कहते हैं।

2 के बराबर ε के स्थिर मूल्य पर विचार कीजिए। मान लीजिए कि m के दो मूल्य क्रमशः $m = 0.5$ और $m = 1$ हैं। m के इन मूल्यों के संगत हम दो सरल रेखाएँ लेते हैं, जिनमें एक-दूसरे की अपेक्षा अधिक खड़े ढाल वाला है। सत्ताएँ ε और m को आलेख का पैरामीटर कहते हैं। ये अक्षों पर दर्शाए परिवर्तों की तरह प्रकट नहीं होते, लेकिन आलेख की स्थिति को नियमित करने के लिए पृष्ठभूमि में कार्य करते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में जैसे-जैसे m बढ़ता है, सरल रेखा ऊपर की ओर बढ़ती है। इसे आलेख (4.1) का **पैरामेट्रिक शिफ्ट** कहते हैं।

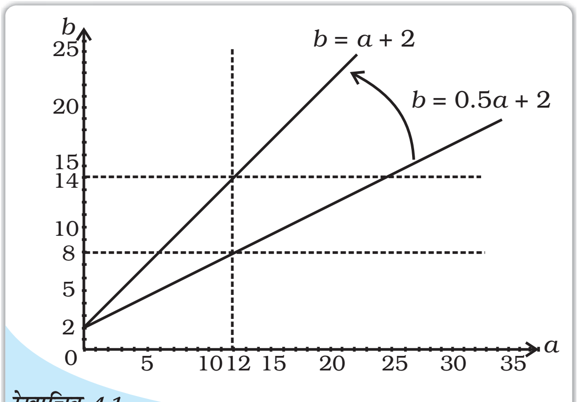

रेखाचित्र 4.1

एक धनात्मक ढाल सरल रेखा का रेखाचित्र उर्ध्व शिफ्ट ढाल के दुगुना होने पर

चूँकि उपर्युक्त आकृति की सरल रेखा का दूसरा पैरामीटर ε है, हम इस रेखा पर पैरामेट्रिक शिफ्ट के दूसरे प्रकार का प्रक्षेण कर सकते हैं। इसे देखने के लिए हमें 0.5 पर m के मूल्य को स्थिर मानकर ε के अंत:खंड 2 से 3 तक वृद्धि करना चाहिए। अब सरल रेखा ऊपर की ओर समांतर रूप से शिफ्ट होगी, जैसाकि रेखाचित्र 4.2 में दर्शाया गया है।

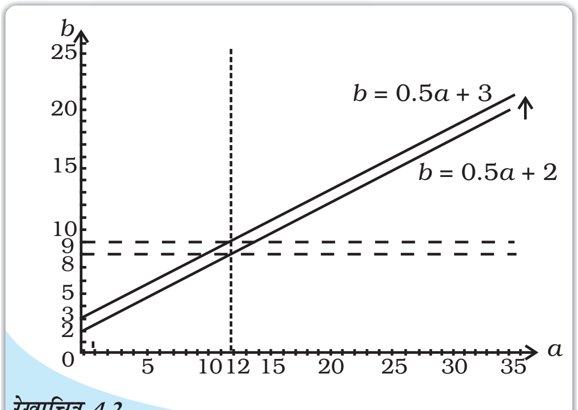

रेखाचित्र 4.2

एक धनात्मक ढाल सरल रेखा का रेखाचित्र उर्ध्व समानांतर शिफ्ट, अंत:खंड के बढ़ने पर

अब क्रमशः नीचे की ओर और ऊपर की ओर ढाल वाली सरल रेखा को प्रदर्शित करने वाले समीकरणों पर विचार कीजिए:

$y = z - x$, और $y = 1 + x$, $z >= 0$

प्रथम समीकरण में z एक अंत:खंड पैरामीटर के रूप में प्रकट हुआ है। अत: z के मूल्य को बढ़ाने के लिए शून्य से प्रारंभ कर प्रथम सरल रेखा ऊपर की ओर समांतर शिफ्ट होगी, जैसाकि रेखाचित्र 4.3 में दर्शाया गया है। परिणामत: दूसरी सरल रेखा के साथ इसके प्रतिच्छेदन बिंदु, पीछे दर्शाये गए की भाँति, दूसरी रेखा पर ऊपर की ओर जायेंगे:

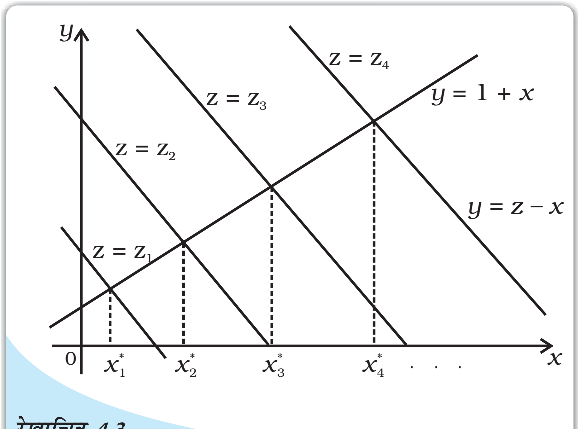

रेखाचित्र 4.3

z का पैरामेट्रिक शिफ्ट और x के मूल्यों का संतुलन परिवर्तन

मान लीजिए, कि हम z और x के संतुलन मूल्य के मध्य संबंध प्राप्त करना चाहते हैं,

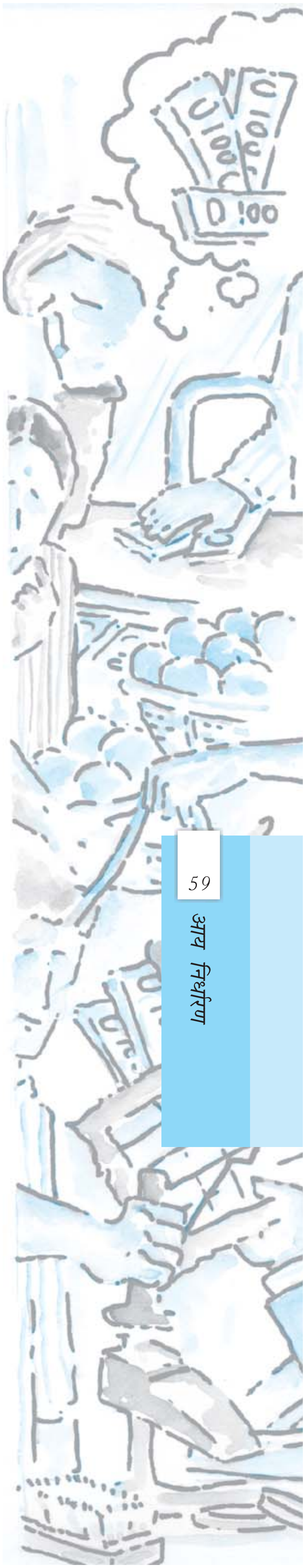

इसे निम्नांकित क्षैतिज और उर्ध्वाधर अक्षों पर क्रमशः x और z परिवर्तों का चित्रांकन करके एक चित्र पर $(x^*_1\ z_1)$, $(x^*_2\ z_2)$, $(x^*_3\ z_3)$ इत्यादि बिंदुएँ अंकित कर प्राप्त किया जा सकता है।

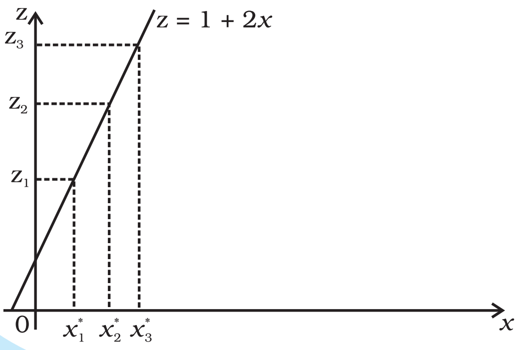

रेखाचित्र 4.4

x और z के बीच संबंध

ध्यान दें (x, y) में समतल z को एक पैरामीटर के रूप में माना गया था, लेकिन (x, z) में z स्वयं एक परिवर्त है। अब तक हमने जो कुछ भी किया है, उसे इस प्रकार देखा जा सकता है: दूसरे समीकरण में x और y पर विचार करते समय हमने z के मूल्य को स्थिर रखा है और y को x के पदों के रूप में हल किया है। उसके बाद x और z के मध्य संबंध व्युत्पन्न करने के लिए प्रथम समीकरण में इस हल को रख दिया है। अब, हम इस तकनीक का प्रयोग पूरे अध्याय में करेंगे।

4.3 उत्पाद बाज़ार का अल्पकालिक स्थिर कीमत विश्लेषण

अब हम अर्थव्यवस्था में अंतिम वस्तुओं की स्थिर कीमत और स्थिर ब्याज दर के अंतर्गत समस्त माँग की व्युत्पत्ति पर विचार करें। किंतु कीमत को किसी विशेष स्तर पर स्थिर रखने के क्रम में यह कल्पना करनी होगी कि उस कीमत पर उपभोक्ता की माँग की जितनी मात्रा होगी, पूर्तिकर्ता उतनी मात्रा की पूर्ति करेंगे। इस कीमत पर माँग की मात्रा से पूर्ति की मात्रा अधिक होने या कम होने से, अधिपूर्ति अथवा अधिमाँग के कारण कीमत में परिवर्तन होगा। इस समस्या से बचने के लिए हम कल्पना करते हैं कि पूर्ति की लोच अनंत है अर्थात् स्थिर कीमत पर पूर्ति अनुसूची क्षैतिज है। ऐसी परिस्थितियों में अर्थव्यवस्था में इस कीमत पर केवल माँग की समस्त मात्रा से ही संतुलन निर्गत का निर्धारण होगा। इसे हम *प्रभावी माँग का सिद्धांत* कहते हैं।

अधिपूर्ति या अधिमाँग को टालने के क्रम में उत्पादक किस प्रकार उत्पादन योजना का नवीनीकरण करने की कोशिश करते हैं? इस पर कक्षा में परिचर्चा करें।

'अल्पकालिक शब्द' पर भी ध्यान दीजिए। हम कल्पना करते हैं कि अर्थव्यवस्था में कीमत को अधिमाँग या अधिपूर्ति की शक्तियों के प्रति अनुक्रिया करने में कुछ समय लगता है। इस बीच, उत्पादक अधिमाँग या अधिपूर्ति की स्थिति को दूर करने के लिए अपनी उत्पादन योजना को अद्यतन करने की कोशिश करते है। उदाहरण के लिए, यदि चालू उत्पादन चक्र में उत्पादक, अधिपूर्ति का सामना करते हैं, तो वे अगले चक्र में कम उत्पादन करेंगे जिससे उनके गोदामों में माल का संचय न हो पाए। यह भी ध्यान रखें कि एक व्यक्तिगत उत्पादक राष्ट्रीय बाज़ार के आकार की तुलना में बहुत छोटा होता है और इसलिए वह बाज़ार कीमत को स्वयं प्रभावित नहीं कर सकता। प्रत्येक उत्पादक को प्रचलित बाज़ार कीमत को स्वीकार करना पड़ता है। अर्थव्यवस्था के समस्त कीमत स्तर में तभी परिवर्तन होता है, जब अधिमाँग या अधिपूर्ति को दूर करने के लिए

अर्थव्यवस्था के सभी बाज़ार में समंजन में असफल हो जाते हैं। अत: यह कल्पना की जाती है कि कीमतों में परिवर्तन केवल दीर्घकाल में ही होता है।

4.3.1 समस्त माँग वक्र पर एक बिंदु

स्थिर कीमत पर अंतिम वस्तु की प्रत्याशित समस्त माँग का मूल्य AD प्रत्याशित उपभोग व्यय और प्रत्याशित निवेश व्यय के कुल योग के बराबर होता है। प्रभावी माँग सिद्धान्त के अंतर्गत अंतिम वस्तुओं का संतुलन निर्गत प्रत्याशित समस्त माँग के बराबर होता है, जिसे समीकरण 4.3 द्वारा प्रदर्शित किया गया है:

$$Y = \overline{A} + c.Y$$

जहाँ $\overline{A}$ अर्थव्यवस्था में स्वायत्त व्यय का कुल मूल्य है। अब हम समस्त माँग के मूल्य को व्युत्पन्न करने के लिए एक संख्यात्मक उदाहरण पर विचार करते हैं और इस प्रकार स्थिर दर पर अर्थव्यवस्था का संतुलन निर्गत प्राप्त करेंगे। मान लीजिए कि स्वायत्त व्यय के मूल्य हैं, $\overline{C} = 40$, $\overline{I} = 10$ और सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (mpc) का मूल्य है $c = 0.8$ हैं, तो Y का संतुलन मूल्य क्या होगा?

परीक्षण हल के लिए हम $Y = 200$ लेते हैं। निर्गत की इस मात्रा पर प्रत्याशित उपभोग व्यय का मूल्य है, $C = \overline{C} + 0.8\,Y = 40 + (0.8)\,200 = 200$ है। प्रत्याशित निवेश व्यय $I = \overline{I} = 10$, है और प्रत्याशित समस्त माँग, $AD = C + I = 200 + 10 = 210$ है। निर्गत स्तर $y = 200$ पर प्रत्याशित समस्त माँग का मूल्य 210 है, जो अधिमाँग की स्थिति को बताता है। स्पष्टत: $Y = 200$, अर्थव्यवस्था में निर्गत का संतुलन स्तर नहीं है।

अब निर्गत स्तर $Y = 300$ पर विचार करते हैं। उपर्युक्त स्थिति जैसी गणना से पता चलता है कि प्रत्याशित समस्त माँग का मूल्य

$$\overline{A} + cY = \overline{C} + 1 + cY = 50 + (0.8)\,300 = 290$$

प्रत्याशित समस्त माँग निर्गत से नीचे गिर जाती है और अधिपूर्ति की स्थिति उत्पन्न होती है। अत: $Y = 300$ भी अर्थव्यवस्था में निर्गत का संतुलन स्तर नहीं है।

अंत में $Y = 250$ पर विचार करते हैं। इस निर्गत पर, $AD = 50 + (0.8)\,250 = 250$। अत: हमने Y का सही मूल्य ज्ञात कर लिया है, जिस पर समस्त माँग, समस्त पूर्ति के बराबर होती है। अत: स्थिर कीमत ब्याज दर समुच्चय पर अर्थव्यवस्था का संतुलन निर्गत $Y = 250$ है।

4.3.2 उत्पाद बाज़ार में संतुलन माँग पर स्वायत्त परिवर्तन का प्रभाव

स्थिर कीमत पर समस्त माँग के संतुलन मूल्य के क्या निर्धारक हैं? दूसरे शब्दों में, यह कौन निर्धारित करता है कि उपर्युक्त उदाहरण में संतुलन समस्त माँग 250 होगी या 210 अथवा 290? स्थिर कीमत–ब्याज दर पर संतुलन निर्गत और समस्त माँग समीकरण $Y = AD = \overline{A} + cY$ को हल करके प्राप्त किया जाता है। यह सिर्फ एक परिवर्त–Y वाला समीकरण है। समीकरण का हल है:

$$Y = \frac{\overline{A}}{1 - c} \qquad (4.4)$$

अत: Y का मूल्य दायीं ओर के पैरामीटर के मूल्यों पर निर्भर करेगा, जो कि इस उदाहरण में $\overline{A}$ और c है। उपर्युक्त उदाहरण में समस्त माँग का संतुलन मूल्य 250 है और इसलिए समस्त माँग अनुसूची में एकल बिंदु की स्थिति जो हमें अब तक प्राप्त हुई है, इन पैरामीटरों के मूल्यों पर निर्भर करेंगी। समीकरण $AD = \overline{A} + cY$ की मानक रूप वाली सरल रेखीय समीकरण: $b = \varepsilon + ma$ से

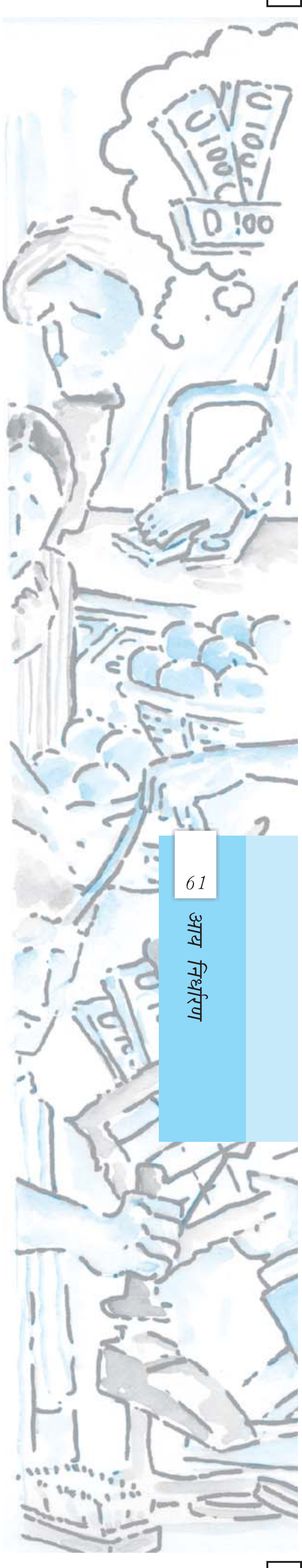

तुलना कीजिए, जैसाकि खंड 4.2 में उल्लेख किया गया है। इस समीकरण में $\bar{A}$ अंत:खंड पैरामीटर है और c पैरामीटर की प्रवणता है। जब c में वृद्धि होगी तो समस्त माँग के समीकरण को निरूपित करने वाली सरल रेखा ऊपर की ओर उठेगी। दूसरी ओर, जब $\bar{A}$ बढ़ेगा तो सरल रेखा ऊपर की ओर समानांतर रूप से शिफ्ट होगी। किंतु, केवल $\bar{A}$ संयुक्त पद है, जो $\bar{C}$ और $\bar{I}$ के योग को निरूपित करता है। अत: यह AD रेखा का वास्तविक शिफ्ट पैरामीटर है।

मान लीजिए, $\bar{I}$ में 10 से 20 तक वृद्धि हो जाती है, तो संतुलन निर्गत और समस्त माँग का क्या होगा? रेखाचित्र 4.5 में इस स्थिति को दर्शाया गया है। रेखाएँ AD_1 और AD_2, $\bar{A}$ के दो मूल्य अर्थात् $\bar{A}_1$ और $\bar{A}_2$ क्रमशः के संगत हैं। इन मूल्यों में $\Delta\bar{I} = 10$ का अंतर है, जो कि स्वायत्त निवेश में वृद्धि है। रेखाएँ AD की प्रवणता $0 < c < 1$ है और उर्ध्वाधर अक्ष पर उनके अंत:खंड क्रमशः $\bar{A}_1$ और $\bar{A}_2$ है। ध्यान दें कि AD रेखा 45 रेखा से कम प्रवणतावाली है क्योंकि 45 रेखा की ढाल 1 (रूप 45 =1) के बराबर है। 45 रेखा उन बिंदुओं को निरूपित करती हैं, जिन पर समस्त माँग और निर्गत बराबर है। अत: अर्थव्यवस्था में जब स्वायत्त व्यय का स्तर $\bar{A}_1$ है तो रेखा AD_1 45 रेखा को E_1 पर प्रतिच्छेद करती है, जो कि संतुलन बिंदु है। निर्गत और समस्त माँग के संतुलन मूल्य क्रमशः Y^*_1 और AD^*_1 (= 250) हैं।

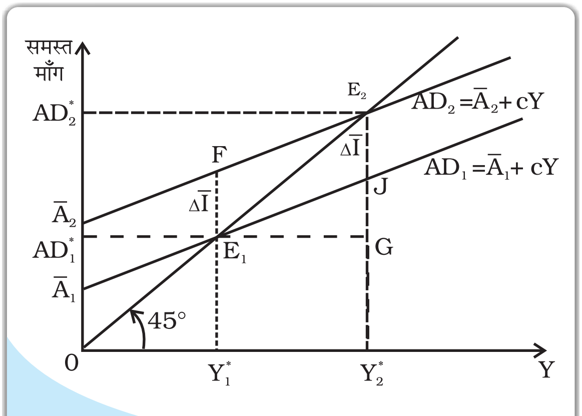

रेखाचित्र 4.5

स्थिर कीमत मॉडल (प्रतिरूप) में संतुलन निर्गत और समस्त माँग

जब स्वायत्त निवेश में वृद्धि होती है, तो रेखा AD_1 ऊपर की ओर समानांतर शिफ्ट होती है और AD_2 की स्थिति को प्राप्त करती है। निर्गत Y^*_1 पर समस्त माँग का मूल्य Y^*_1F है, जो निर्गत $OY^*_1 = Y^*_1E_1$ के मूल्य से E_1F के परिमाण के बराबर अधिक है। E_1F से अधिमाँग के परिणाम की माप होती है, जो अर्थव्यवस्था में स्वायत्त व्यय में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। अत: E_1 संतुलन को निरूपित नहीं करता। अंतिम वस्तु बाज़ार में नये संतुलन की प्राप्ति के लिए हमें उस बिंदु की खोज करनी होगी, जहाँ नयी समस्त माँग रेखा AD_2, 45 रेखा को प्रतिच्छेद करेगी। यह बिंदु E_2 पर होता है, जो नया संतुलन बिंदु है। निर्गत और समस्त माँग के नये मूल्य क्रमशः Y^*_2 और AD^*_2 है।

ध्यान रखें कि नये संतुलन निर्गत तथा समस्त माँग में $E_1G = E_2G$ के परिमाण में वृद्धि होती है, जो स्वायत्त व्यय $\Delta\bar{I} = E_1F = E_2J$ में प्रारंभिक वृद्धि से अधिक है। अत: स्वायत्त व्यय में प्रारंभिक वृद्धि से प्रतीत होता है कि समस्त माँग और निर्गत के संतुलन मूल्यों पर अधिप्लावन प्रभाव पड़ता है। किस कारण से समस्त माँग और निर्गत के स्वायत्त व्यय में प्रारंभिक वृद्धि के आकार से अधिक बड़े परिमाण में वृद्धि होती है? इसकी चर्चा हम खंड 4.3.3 में करेंगे।

4.3.3 गुणक यांत्रिकता

स्पष्ट रूप से निर्गत अथवा समस्त माँग का संतुलन मूल्य 250 नहीं है। $\bar{I} = 20$ के साथ अर्थव्यवस्था में समस्त माँग समीकरण (4.4) से $40 + 20 + (0.8)\,250 = 260$ होगा, जो निर्गत $Y = 250$ से स्वायत्त निवेश ($\Delta\bar{I} = 10$) में वृद्धि परिमाण के बराबर अधिक है। अर्थव्यवस्था में

अधिमाँग की स्थिति होगी और उत्पादक इस अतिरिक्त माँग की पूर्ति के लिए अपनी माल–सूची में कमी लाएँगे। अत: अगले उत्पादन चक्र में वे पुन: अपनी उत्पादन योजना को ऊपर की ओर संशोधित करेंगे अर्थात वे अंतिम वस्तु बाज़ार में संतुलन की पुन: प्राप्ति के लिए अपने निर्गत की नियोजित पूर्ति में 10 की वृद्धि करेंगे।

सरकार के द्वारा अप्रत्यक्ष कर नहीं लगाने अथवा उपदान नहीं देने की स्थिति में, अंतिम वस्तुओं के कुल निर्गत का मूल्य अथवा सकल घरेलू उत्पाद राष्ट्रीय आय के बराबर होगा। अंतिम वस्तुओं के उत्पादन में श्रम, पूँजी, भूमि और उद्यम जैसे कारकों को लगाया जाता है। अप्रत्यक्ष कर अथवा उपदान की अनुपस्थिति में अंतिम वस्तुओं के निर्गत के कुल मूल्य को उत्पादन के विभिन्न कारकों में वितरित कर दिया जाता है, जो क्रमश: श्रम की मज़दूरी, पूँजी का ब्याज, भूमि का लगान आदि होते हैं। शेष बचा हुआ उद्यमी के पास रहता है, जिसे लाभ कहा जाता है। अत: अर्थव्यवस्था में समस्त कारक अदायगी का योग, राष्ट्रीय आय, अंतिम वस्तुओं के निर्गत के समस्त मूल्य, सकल घरेलू उत्पाद के बराबर होता है। उपर्युक्त उदाहरण में, अतिरिक्त निर्गत का मूल्य 10 को, विभिन्न कारकों में कारक अदायगी के रूप में वितरित कर दिया जाता है और इस प्रकार अर्थव्यवस्था की आय में 10 की वृद्धि होती है। जब आय में 10 की वृद्धि होती है, तब उपभोग व्यय में भी (0.8)10 की वृद्धि होती है, क्योंकि लोग उपभोग पर अपनी अतिरिक्त आय का 0.8 (सीमांत उपभोग प्रवृत्ति) व्यय करते हैं। अत: अगले दौर में अर्थव्यवस्था में समस्त माँग में (0.8)10 की वृद्धि होती है और पुन: (0.8)10 के बराबर अधिमाँग उत्पन्न होती है। इसीलिए अगले उत्पादन चक्र में पुन: संतुलन स्थापित करने के लिए, उत्पादक अपने नियोजित निर्गत में (0.8)10 की वृद्धि करता है। जब इस अतिरिक्त निर्गत को उत्पादन के कारकों के मध्य वितरित कर दिया जाता है, तो अर्थव्यवस्था की आय में (0.8)10 की वृद्धि होती है और उपभोग माँग बढ़कर $(0.8)^2$ 10 हो जाती है। पुन: उसी परिमाण में अधिमाँग की उत्पत्ति होती है। यह प्रक्रिया एक चक्र के बाद दूसरे चक्र में निरंतर जारी रहती है। प्रत्येक चक्र में उत्पादक अधिमाँग को दूर करने के लिए अपने निर्गत में वृद्धि करता है और उपभोक्ता इस अतिरिक्त उत्पादन से अपनी अतिरिक्त आय का एक अंश उपभोग मदों पर व्यय करता है और इससे अगले दौर में पुन: अधिमाँग का सृजन होता है।

अब निम्नलिखित तालिका (4.1) में प्रत्येक दौर में समस्त माँग और निर्गत के मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाया जाएगा।

तालिका 4.1: **अंतिम वस्तु बाज़ार में गुणक यांत्रिकता**

	उपभोग	*समस्त माँग*	*निर्गत/आय*
दौर 1	0	10 (स्वत: बढ़ोतरी)	10
दौर 2	(0.8)10	(0.8)10	(0.8)10
दौर 3	$(0.8)^2 10$	$(0.8)^2 10$	$(0.8)^2 10$
दौर 4	$(0.8)^3 10$	$(0.8)^3 10$	$(0.8)^3 10$
.	.	.	.
.	.	.	.
.	.	.	.
.	.	.	इत्यादि

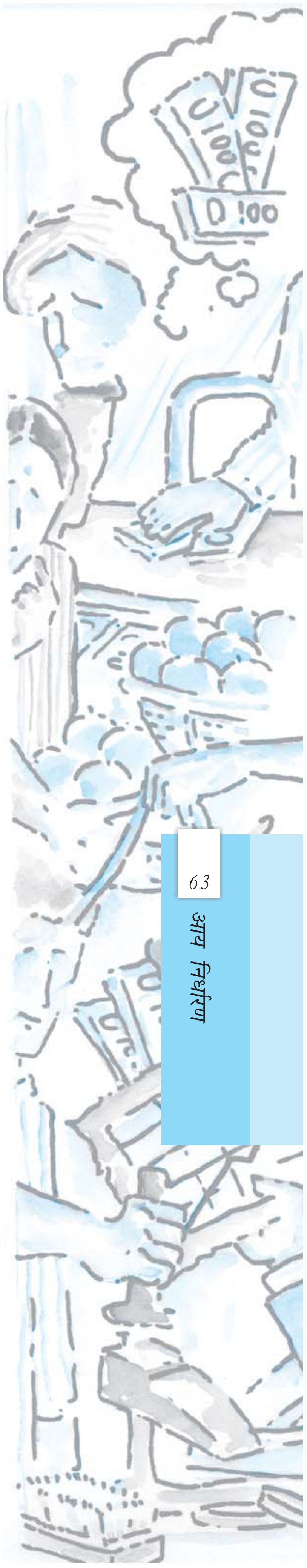

प्रत्येक दौर में अंतिम वस्तुओं के निर्गत के मूल्य (अर्थव्यवस्था की आय) में वृद्धि की माप अंतिम कॉलम में की गई है। दूसरे और तीसरे कॉलम में अर्थव्यवस्था में कुल उपभोग व्यय में वृद्धि और इस तरह समस्त माँग के मूल्य में वृद्धि की माप की गई है। ध्यान रखें कि क्रमिक चक्रों में अंतिम वस्तुओं के निर्गत में वृद्धि धीरे-धीरे घट रही है। अतः कई चक्रों के बाद वृद्धि वास्तव में शून्य हो जाएगी और क्रमिक चक्रों से निर्गत के कुल परिमाण में कोई योगदान नहीं होगा। हम कहते हैं कि अंतिम वस्तुओं के निर्गत को प्रभावित करने वाले चक्र, *अभिसारी प्रक्रिया* को प्रदर्शित करती हैं। अंतिम वस्तुओं के निर्गत में कुल वृद्धि को प्राप्त करने के लिय हमें, अंतिम कॉलम में अनंत ज्यामितीयशृंखला का योग प्राप्त करना चाहिए।

अर्थात्–

$$10 + (0.8)10 + (0.8)^2\,10 + \cdots\cdots\infty$$

$$10\,\{1 + (0.8) + (0.8)^2 + \cdots\cdots\infty\} = \frac{10}{1-0.8} = 50$$

अतः स्वायत्त व्यय में प्रारंभिक वृद्धि से कुल निर्गत के संतुलन मूल्य में अधिक वृद्धि होती है। अंतिम वस्तुओं के निर्गत के संतुलन मूल्य में कुल वृद्धि और स्वायत्त व्यय में आरंभिक वृद्धि के अनुपात को अर्थव्यवस्था का *निर्गत गुणक* कहते हैं। स्मरण रहे कि 10 और 0.8 क्रमशः $\Delta\bar{I} = \Delta\bar{A}$ तथा *mpc* मूल्य को प्रदर्शित करते हैं। अतः गुणक की अभिव्यक्ति को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$\text{निर्गत गुणक} = \frac{\Delta Y}{\Delta\bar{A}} = \frac{1}{1-c} \qquad (4.5)$$

जहाँ ΔY अंतिम वस्तु निर्गत की कुल वृद्धि तथा c =mpc (सीमांत उपभोग प्रवृत्ति) है। देखें कि गुणक का आकार c के मूल्य पर निर्भर करता है। जैसे-जैसे c बढ़ता है, गुणक में वृद्धि होती जाती है।

पिछले उदाहरण में, स्वायत्त व्यय में 10 की वृद्धि से अर्थव्यवस्था में कुल निर्गत और समस्त माँग में 50 की वृद्धि होती है। इस प्रकार गुणक का मूल्य 5 है। गणना का प्रति परीक्षण करने के लिए नये संतुलन $\bar{I} = 20$ पर समस्त माँग और निर्गत के मूल्य की गणना करते हैं। समीकरण (4.4) से नये संतुलन में निर्गत का मूल्य निम्न के बराबर होगा:

$$Y_2^* = \frac{40+20}{1-0.8} = 300$$

इससे सिद्ध होता है कि गुणक की हमारी गणना वास्तव में सही है।

इस रोचक प्रति आनुमानिक तथ्य अथवा 'विरोधाभास' के साथ, हम अंतिम वस्तु बाज़ार के स्थिर कीमत-ब्याज दर विश्लेषण का निष्कर्ष निकालेंगे। यदि अर्थव्यवस्था के सभी लोग अपनी आय से बचत के अनुपात को बढ़ा दे (अर्थात यदि अर्थव्यवस्था की बचत की सीमांत प्रवृत्ति बढ़ जाती है) तो अर्थव्यवस्था में बचत के कुल मूल्य में वृद्धि नहीं होगी अर्थात् इससे या तो बचत में कमी आएगी या वह अपरिवर्तित रहेगी। इस परिणाम को **मितव्ययिता का विरोधाभास** कहते हैं जो यह बतलाता है कि जब लोग अधिक मितव्ययी हो जाते हैं, तो वे कमोबेश पूर्ववत ही बचत करते हैं। यह परिणाम, यद्यपि असंभव प्रतीत होता है, किंतु वास्तव में हमारे द्वारा पढ़े गए मॉडल का अनुप्रयोग है।

इस उदाहरण पर और विचार करते हैं। मान लीजिए, कि Y का प्रारंभिक संतुलन = 250 और लोगों के व्यय के स्वरूप में बहिर्जात अथवा स्वायत्त शिफ्ट होता है। अकस्मात वे अधिक

मितव्ययी बन जाते हैं। ऐसा किसी बड़े युद्ध अथवा किसी अन्य आसन्न खतरे के संबंध में नई सूचना के कारण हो सकता है। इसके फलस्वरूप लोग अपने खर्च में अधिक परिनिरीक्षण और अनुदारिता बरतने लगते हैं। अत: अर्थव्यवस्था की सीमांत बचत प्रवृत्ति (mps) में वृद्धि होती है अथवा विकल्पत: सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (mpc) 0.8 से घटकर 0.5 रह जाती है। प्रारंभिक आय–स्तर $AD^*_1 = Y^*_1 = 250$ पर, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति में आकस्मिक ह्रास समस्त उपभोग व्यय में ह्रास का द्योतक होगा, जो समस्त माँग, $AD = \bar{A} + cY$ (0.8 – 0.5) 250 = 75 के परिमाण के बराबर होगा। इसे उपभोग व्यय में स्वायत्त कटौती कहा जा सकता है। यह कटौती उस सीमा तक हो सकती है कि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति में किसी बाह्य कारण से परिवर्तन हो रहा हो और यह मॉडल के परिवर्तों में परिवर्तन के फलस्वरूप नहीं होता है। लेकिन जब समस्त माँग में 75 तक ह्रास होता है, तो निर्गत $Y^*_1 = 250$ में गिरावट आती है और अर्थव्यवस्था में इससे 75 के बराबर तक अधिपूर्ति उत्पन्न होती है। गोदामों में माल भरा पड़ा रहता है और उत्पादक बाज़ार में संतुलन की पुनर्स्थापना के लिए अगले चक्र में 75 की कमी करने का निर्णय लेता है। किंतु इसका अर्थ है कि अगले चक्र में कारक भुगतान और आय में 75 की कमी होगी। जैसे–जैसे आय में ह्रास होता है, लोग आनुपातिक रूप से उपभोग में कटौती करते हैं। किंतु इस बार सीमांत उपभोग प्रवृत्ति के नये मूल्य के अनुसार, जो कि 0.5 है, कटौती होती है। उपभोग व्यय और समस्त माँग में इस प्रकार (0.5) 75 की कमी होती है, जिससे बाज़ार में पुन: अधिपूर्ति का सृजन होता है। अत: अगले दौर में, उत्पादक पुन: निर्गत में (0.5) 75 की कटौती करते हैं। लोगों की आय इसी के अनुसार घटती है और उपभोग व्यय और समस्त माँग में पुन: $(0.5)^2\,75$ का ह्रास होता है। यह प्रक्रिया निरंतर जारी रहती है। किंतु जैसाकि क्रमिक चक्र के प्रभावों के मूल्यह्रास से अनुमान किया जा सकता है कि प्रक्रिया में अभिसरण होता है। निर्गत और समस्त माँग के मूल्य में कुल कितना ह्रास है? यदि अनंत शृंखलाएँ 75 + (0.5) 75 + $(0\text{-}5)^2\,75 + \cdots \infty$ को जोड़ दें, तो निर्गत में कुल कटौती,

$$\frac{75}{1-0.5} = 150$$

लेकिन इसका अर्थ है कि अर्थव्यवस्था में नया संतुलन निर्गत केवल $Y^*_2 = 100$ है। अब लोग $S^*_2 = Y^*_2 - C^*_2 = Y^*_2 - (\bar{C} + c_2 Y^*_2) = 100 - (40 + 0.5 \;\; 100)$ = समस्त 10 की बचत कर रहे हैं। जबकि पूर्व संतुलन के अंतर्गत उनकी बचत $S^*_1 = Y^*_1 - C^*_1 = Y^*_1 - (\bar{C} + c_1 Y^*_1) = 250 - (40 + 0.8 \;\; 250) = 10$, पहले सीमांत उपभोग प्रवृत्ति पर। $C_1 = 0.8$ अत: अर्थव्यवस्था में बचत का कुल मूल्य अपरिवर्तित रहता है।

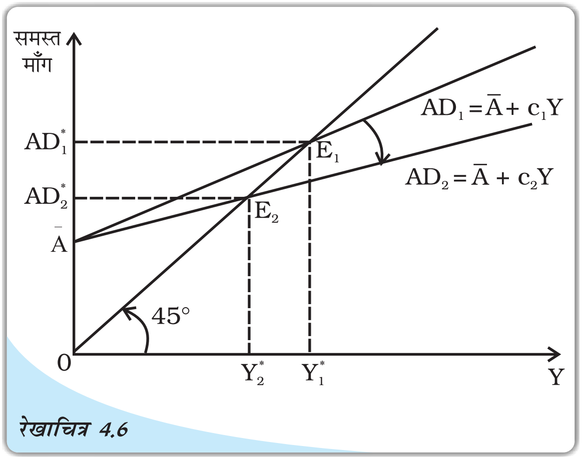

रेखाचित्र 4.6

मितव्ययिता का विरोधाभास–समस्त माँग रेखा का नीचे की ओर झुकाव

खंड 4.3.2 में हमने रेखा *AD* की स्थिति में दो प्रकार के पैरामेट्रिक परिवर्तनों के बारे में चर्चा की। जब $\bar{A}$ में परिवर्तन

हो, तो रेखा में समांतर रूप से ऊपर की ओर अथवा नीचे की ओर शिफ्ट होती है। किंतु जब c में परिवर्तन होता है, तो रेखा ऊपर या नीचे को झुकती है। सीमांत उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि अथवा सीमांत बचत प्रवृत्ति में कमी से, रेखा AD की प्रवणता में कमी आती है और यह नीचे की ओर झुकती है। इस स्थिति का चित्रांकन रेखाचित्र 4.6 में किया गया है।

पैरामीटरों के प्रारंभिक मूल्य $\bar{A} = 50$ और $c = 0.8$ पर निर्गत का संतुलन मूल्य और समस्त माँग समीकरण (4.4) में –

$$Y_1^* = \frac{50}{1-0.8} = 250$$

पैरामीटर के परिवर्तित मूल्य $c = 0.5$ के अंतर्गत निर्गत और समस्त माँग का नया संतुलन मूल्य है।

$$Y_2^* = \frac{50}{1-0.5} = 100$$

संतुलन निर्गत और समस्त माँग में 150 की कमी हुई है। जैसाकि ऊपर बताया गया है, इससे यह सिद्ध होता है कि बचत के कुल मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं है।

सारांश

जब किसी विशेष कीमत स्तर पर अंतिम वस्तु की समस्त माँग, समस्त पूर्ति के बराबर होती है, तो अंतिम वस्तु अथवा उत्पाद बाज़ार संतुलन की स्थिति में होता है। अंतिम वस्तु की समस्त माँग में प्रत्याशित उपभोग, प्रत्याशित निवेश, सरकारी व्यय आदि आते हैं। आय में इकाई वृद्धि के कारण प्रत्याशित उपभोग में वृद्धि की दर को सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं। सरलता की दृष्टि से, अर्थव्यवस्था में अंतिम वस्तु के स्तर के निर्धारण के लिए अल्पकाल में हम समस्त माँग एक नियत अंतिम वस्तु कीमत और नियत ब्याज की दर को मान लेते हैं। अल्पकाल में हम यह भी मान लेते हैं कि इस कीमत पर समस्त पूर्ति पूर्णतः लोचदार है। इन परिस्थितियों में समस्त निर्गत का निर्धारण केवल समस्त माँग के स्तर पर ही निर्धारित होता है। इसे *प्रभावी माँग का सिद्धांत* कहते हैं। स्वायत्त व्यय में वृद्धि (ह्रास) के कारण गुणक प्रक्रिया के द्वारा अंतिम वस्तु के समस्त निर्गत में बड़ी मात्रा में वृद्धि (ह्रास) होती है।

मूल संकल्पनाएँ

समस्त माँग	समस्त पूर्ति
संतुलन	प्रत्याशित
यथार्थ	प्रत्याशित उपभोग
सीमांत उपभोग प्रवृत्ति	प्रत्याशित निवेश
माल–सूची में अनभिप्रेत परिवर्तन	स्वायत्त परिवर्तन
पैरामेट्रिक शिफ्ट	प्रभावी माँग का सिद्धांत
मितव्ययिता का विरोधाभास	स्वायत्त व्यय गुणक

अभ्यास

1. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति किसे कहते हैं? यह किस प्रकार सीमांत बचत प्रवृत्ति से संबंधित है?
2. प्रत्याशित निवेश और यथार्थ निवेश में क्या अंतर है?
3. "किसी रेखा में पैरामेट्रिक शिफ्ट" से आप क्या समझते हैं? रेखा में किस प्रकार शिफ्ट होता है जब इसकी (i) ढाल घटती है और (ii) इसके अंत:खंड में वृद्धि होती है।
4. 'प्रभावी माँग' क्या है? जब अंतिम वस्तुओं की कीमत और ब्याज की दर दी हुई हो, तब आप स्वायत्त व्यय गुणक कैसे प्राप्त करेंगे?
5. जब स्वायत्त निवेश और उपभोग व्यय (A) 50 करोड़ रु॰ हो और सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) 0.2 तथा आय (Y) का स्तर 4,000.00 करोड़ रु॰ हो, तो प्रत्याशित समस्त माँग ज्ञात करें। यह भी बताएँ कि अर्थव्यवस्था संतुलन में है या नहीं (कारण भी बताएँ)।
6. मितव्ययिता के विरोधाभास की व्याख्या कीजिए।

सुझावात्मक पठन
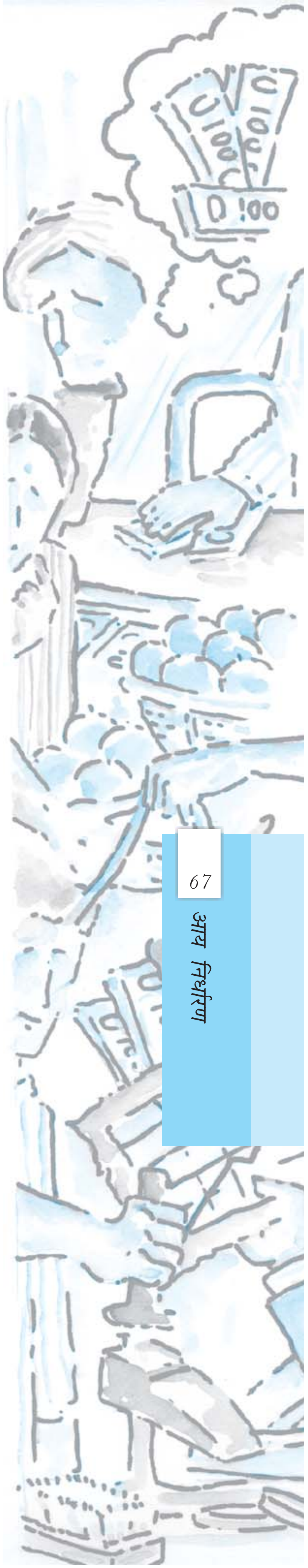
डोर्नबुश, आर. और फिशर, एस. 1990, *मैक्रोइकोनॉमिक्स* (पाँचवा संस्करण) पृ॰ 63–105, मैक्ग्रॉहिल, पेरिस।